सेमी के हो जाए तब उन्हें उखाड़कर रोपाई करना चाहिए। इसकी फसल 04 से 05 माह में पककर तैयार हो जाती है।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

सामान्यत: इसमें रोगों का प्रभाव नहीं होता है। कीटों के नियंत्रण के लिए मैलाथियोन दवा का 02 मिली. प्रतिलीटर का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

पॉटिंग मिश्रण

इसके पौधों को अंकुरण के तत्काल पश्चात् पॉलिथिन में रोपित नहीं किया जाता है। इसके लिए अंकुरण पश्चात् सीधे रोपण स्थल पर पौधों का रोपण किया जाता है जिसमें 15 किग्रा. नत्रजन प्रति हैक्टेयर प्रथम सिंचाई के समय दिया जाता है।

पॉलीथिन का माप

पॉलीथिन में पौधों का रोपण नहीं किया जाता है परंतु आवश्यकता होने पर 12 X 24 सेमी. माप की पॉलिथिन का उपयोग किया जा सकता है जिसमें रेत + मिट्टी + गोबर खाद को समान मात्रा में लेकर मिश्रण का उपयोग करना चाहिए।

उपयोग

यह पेट की जलन, यकृत वृद्धि, रक्त विकार, आंत्रशोध, मलेरिया ज्वर तथा चर्म रोगों में उपयोगी होता है। खून एवं लिवर की बीमारी के लिए अत्यंत उपयोगी औषधि है। इस पौधे के प्रत्येक भाग का उपयोग औषधी में किसी न किसी रूप में किया जाता है।

कालमेघ में एन्ड्रोकोलाईड तथा कालमेघिन नामक रासायनिक तत्व पाये जाते हैं जो कि औषधीय दृष्टि से अत्यंत उपयोगी होते हैं। कालमेघ की फसल से प्रतिहैक्टेयर 04 से 05 क्विंटल बीज तथा 30 से 35 क्विंटल शुष्क शाक मिलती हैं। इसकी खेती पर प्रति हैक्टेयर लगभग रू. 10000/- खर्च आता है। इसका बाजार भाव बीज रू.100/- प्रतिकिलोग्राम एवं पत्तियां 30 से 40 रू. प्रतिकिलोग्राम है। अत: इसकी खेती से 25 से 30 हजार रू. प्रति हैक्टेयर शुद्ध लाभ अर्जित किया जा सकता है।

(स्त्रोत- डॉ.एस.के.द्विवेदी, जे.एन.के.व्ही.व्ही. जबलपुर)

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

कालमेघ

बीज एवं रोपणी तकनीक

(एन्ड्रोग्राफिक पैनिकुलेटा)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

कालमेघ बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम	-	कालमेघ
वानस्पतिक नाम	-	*एन्ड्रोग्राफिक पैनिकुलेटा*

परिचय

यह एथैंसी कुल का सीधा बढ़ने वाला शाकीय पौधा है जो कि पडती जगहों पर, खेत की मेढों पर उगता है।

पहचान

इसकी ऊँचाई 1 से 1.5 फिट तक होती है। इसकी पत्तियां अत्यंत सकरी, लंबवत होती हैं।

प्राप्ति स्थान

यह मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र में पाया जाता है। म.प्र. में यह मुख्यत: सिवनी, छिन्दवाडा, बालाघाट, मण्डला, कटनी आदि जिलों में पाया जाता है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

कालमेघ के लिए समशीतोष्ण जलवायु आवश्यक है। इसके साथ ही औसत वर्षा 75-90 सेमी होनी चाहिए परंतु 125 से 130 सेमी. वर्षा वाले स्थानों में भी यह पाया जाता है। यह उत्तम जल निकासी वाली दोमट कछारी तथा मटियारी काली भूमि में अच्छी वृद्धि करता है। इसके लिए मिट्टी का पी.एच. सामान्य होना चाहिए।

बीज चक्र

बीजोत्पादन प्रतिवर्ष होता है।

ऋतु जैविकी (Phenology)

यह एक औषधीय पौधा है अत: इसके फूल अगस्त-सितंबर माह में आते हैं जबकि फल अक्टूबर से दिसंबर माह के मध्य लगकर तैयार होते हैं। इसके बीज का संग्रहण दिसंबर-जनवरी में किया जाता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 1.5 से 02 लाख तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज की जीवन क्षमता अवधि 01 वर्ष तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में 04 से 06 माह तक आंतरिक सुसुप्तावस्था पायी जाती है।

अंकुरण क्षमता

संग्रहण के पश्चात् 35 से 40 प्रतिशत जबकि 04 से 06 माह के भण्डारण के पश्चात् 60 से 70 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 30 से 50 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

पॉलिथिन बैग में 4°C तापमान पर भण्डारित करने पर अंकुरण प्रतिशत एवं जीवनक्षमता अवधि बढ़ जाती है।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के 01 वर्ष के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

बुवाई पूर्व बीज को ठंडे पानी में 24 घंटे तक भिगोंकर रखने के पश्चात् बुवाई करना उचित होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

बीज अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम रेत है।

बुआई का समय

माह दिसंबर-जनवरी में बीज की बुवाई की जाना चाहिए।

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 04 से 05 ग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

बीज को बोने से पहले 24 घंटे पानी में भिगो कर रखें तत्पश्चात् क्यारी अथवा जर्मिनेशन ट्रे में रेत की परत बिछाकर बुवाई करें। अंकुरण के बाद जब पौधे 20